e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 6, June 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

चीन युद्ध रूस युद्ध क्या विश्व युद्ध की ओर ले जा रहे हैं

Dr. Mamta Singh

Assistant Professor in Political Science, Government College, Maniya, Dholpur, India

सार

रूस-यूक्रेन युद्ध के भविष्य को लेकर डरा देने वाली धमकियां सामने आ रही हैं। रूस ने चेतावनी दी है कि दुनिया में तीसरे विश्व युद्ध का खतरा 'वास्तविक' है। इस धमकी के बाद भी यूक्रेन को मिलने वाली पश्चिमी मदद रुकी नहीं है। अब चीन ने भी रूसी धमकी को खारिज किया है और सभी पक्षों से संयम बरतने की अपील की है। चीन ने अभी तक यूक्रेन पर रूसी हमले की आलोचना नहीं की है और न ही मॉस्को पर किसी तरह के प्रतिबंध लगाए हैं। चीन ने रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव की यूक्रेन युद्ध को लेकर परमाणु संघर्ष की 'गंभीर' आशंका संबंधी चेतावनी को मंगलवार को खारिज करते हुए कहा कि कोई भी तीसरा विश्व युद्ध नहीं देखना चाहता। रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद तीसरे विश्व युद्ध के छिड़ने के खतरे के बारे में लावरोव की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने बीजिंग में एक मीडिया ब्रीफिंग में कहा, 'कोई भी तीसरा विश्व युद्ध नहीं देखना चाहता।' वांग ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि संबंधित पक्ष संयम बरत सकते हैं, तनाव को बढ़ने से रोक सकते हैं, जल्द से जल्द शांति का माहौल बना सकते हैं।' रूसी समाचार एजेंसी 'तास' ने लावरोव के हवाले से कहा कि परमाणु युद्ध की अस्वीकार्यता रूस की सैद्धांतिक स्थिति है। हालांकि, इस तरह के संघर्ष के खतरे को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। चीन की स्थिति को रेखांकित करते हुए वांग ने कहा, 'मौजूदा परिस्थितियों में, सभी पक्षों को संघर्ष रोकने के लिए बातचीत का समर्थन करना चाहिए।'

परिचय

रूस के साथ होते हुए भी चीन खुलकर समर्थन व्यक्त करने से बच रहा है। रूस पर कड़े पश्चिमी प्रतिबंधों का दबाव चीन भी महसूस कर रहा है। कुछ दिनों पहले अमेरिका ने यूक्रेन के साथ युद्ध में रूस की मदद करने पर चीन को प्रतिबंधों की चेतावनी दी थी। वरिष्ठ अमेरिकी राजनयिक ने रूस को युद्ध में किसी भी तरह की मदद की पेशकश करने पर चीन को चेतावनी दी। इसके साथ ही उन्होंने भारत से रूसी हथियारों की निर्भरता को खत्म करने पर जोर दिया।[1,2]

अमेरिका की उप विदेश मंत्री वेंडी शेर्मन ने गुरुवार को ब्रसेल्स में एक कार्यक्रम में कहा कि चीन रूस के दुष्प्रचार अभियानों को बढ़ाने जैसे काम करके यूक्रेन की मदद नहीं कर रहा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि चीन को रूस और यूक्रेन के युद्ध से सबक सीखना चाहिए और यह भी याद रखना चाहिए कि अमेरिका अपने सहयोगियों का साथ नहीं छोड़ता है। विश्व में इस समय दो बड़े वैश्विक मुद्दे हैं जो पूरी दुनिया को परेशान कर रहे हैं. पहला है रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध जो 52 दिनों के बाद भी रुकने के नाम नहीं ले रहा. यूक्रेन जैसा छोटा सा देश रूस जैसे सुपरपावर को कांटे की टक्कर दे रहा है. [3,4]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

अपनी हालत से बौखलाए रूस बार बार न्यूक्लिअर हमले की धमकी दे रहा है. ऐसा हुआ तो विश्व युद्ध शुरू होना निश्चित है. तो दूसरी तरफ चीन और ताइवान के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है. कयास लगाए जा रहे हैं कि इन दोनों के बीच कभी भी युद्ध छिड़ सकता है. ये भी तीसरा विश्व युद्ध शुरू होने की वजह बन सकता है. दुनिया इस वक्त ऐसे मुहाने पर खड़ी है कि कहीं से भी कोई आहट आती है तो डर लगता है कि एक और युद्ध की रणभेरी न बज गई हो. रूस यूक्रेन के बीच पिछले 50 दिनों से चल रही लड़ाई में कभी बायो-वेपन तो कभी परमाणु बमों की धमकियां सुनने को पहले ही मिल रही हैं. तीसरे विश्वयुद्ध के निरंतर बने इस खतरे के बीच चीन पूरी कोशिश में लगा है कि इस युद्ध को अपने फायदे के लिए भुना ले और जिस तरह से ड्रैगन की गतिविधियां देखने को मिल रही हैं, उससे आशंका है कि जिन पिंग ताइवान को लेकर कुछ बड़ी प्लानिंग में तो नहीं हैं. भारत के लिए ये संकट इसलिये और भी ज्यादा भयावह होता दिख रहा है क्योंकि अगले कुछ दिन में पेट्रोल-डीजल और गैस की कीमतों में जो बढ़ोतरी होने वाली है उससे महंगाई इस कदर बढ़ेगी कि वो किसी हाहाकार मचाने से कम साबित नहीं होगी. इस युद्ध के चलते अन्तराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों ने साल 2008 का रिकार्ड तोड़ दिया है और वो अब 139 डॉलर प्रति बैरल तक आ पहुंचा है. लेकिन इससे भी ज्यादा खतरनाक स्थिति ये होने वाली है कि अमेरिका अब रूस से तेल खरीदने पर प्रतिबंध लगाने की सोच रहा है. अमेरिका द्वारा लिए जाने वाले इस फैसले की भनक लगते ही रूस के उप प्रधानमंत्री नोवाक ने जो कहा है वो भारत समेत पूरी दुनिया के लोगों को रुलाने के लिये काफी है. उन्होंने ये कहकर सबको डरा दिया है कि अगर रूस पर तेल का बैन लगता है तो फिर दुनिया में कच्चे तेल की कीमत 300 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती है. [5,6]

विचार-विमर्श

उनके इस दावे की पुष्टि तो फिलहाल कोई नहीं कर सकता लेकिन सिर्फ कल्पना करके ही देखिये कि अगर वाकई ऐसा हो गया तब भारत में आम लोगों का क्या हाल होगा और देश की अर्थव्यवस्था किस गर्त में चली जायेगी. शायद इसीलिये पीएम मोदी के अलावा इजरायल और तुर्की ऐसे देश हैं जिन्होंने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से सीधी बात करके उन्हें ये जंग रोकने की सलाह दी है. लेकिन पुतिन भी अपनी जिद पर कुछ ऐसे अड़े हुए हैं कि वे अब इस लड़ाई को रोकने और पीछे हट जाने को अपनी सबसे बड़ी तौहीन मान रहे हैं इसलिये वे दुनिया की किसी भी ताकत की समझाइश मानने को तैयार नहीं हैं. पुरानी कहावत है कि किसी भी लड़ाई की तीन ही वजह होती हैं जो एक परिवार से लेकर दुनिया के देशों पर भी लागू होती रही हैं और वे हैं- जर,जोरु व जमीन. रूस-यूक्रेन के बीच चल रही जंग भी यूक्रेन की जमीन को कब्जाने और वहां अपनी बादशाहत हासिल करने के लिए ही है. लेकिन जंग की ये सनक दुनिया को कितना तबाह कर सकती है इसकी फिक्र न पुतिन को है और न ही दुनिया के सुपर पावर अमेरिका को ही है.[7,8]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

अन्तराष्ट्रीय मीडिया में आई रिपोर्ट्स की मानें तो अमेरिका ने अपने एक लाख से ज्यादा सैनिक यूरोप की जमीन पर भेज दिए हैं जो रूस को भड़काने व उकसाने के लिए काफी हैं. लेकिन अमेरिका की तरफ से जो दूसरा दावा किया गया है वो दुनिया को डराने वाला इसलिये है कि क्या वो तीसरा विश्व युद्ध छेड़ने का बिगुल बजाने के लिये अब तैयार हो गया है[13] अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन से आई रिपोर्ट के मुताबिक अगर अगले 10 दिन तक ये युद्ध चला, तो नाटो देशों की सेनाओं की इसमें एंट्री हो जाएगी. वैसे भी अमेरिका ने परमाणु हथियारों से लैस अपनी पनडुब्बी को यूरोप के समंदर में भेजकर रूस के खिलाफ अपना इरादा जाहिर कर दिया है. सामरिक विशेषज्ञ मानते हैं कि अमेरिका एकदम से तो सामने आकर नहीं लड़ेगा लेकिन यूक्रेन को बचाने और रूस से मुकाबला करने के लिए उसने पूरे यूरोप को आर-पार की लड़ाई लड़ने के लिए कमोबेश तैयार कर लिया है. यही वजह है कि उसने रूस पर दबाव बनाने के मकसद से ही ये कहा है कि अगर इस जंग को आगे और 10 दिन तक खींचा तो उसके बेहद खतरनाक नतीजे सामने आएंगे. हालांकि रूस की तरफ से फिलहाल इसका कोई जवाब नहीं आया है लेकिन जानकार मानते हैं कि पुतिन के तेवरों को देखकर ये नहीं लगता कि वे डरेंगे या पीछे हटेंगे. [9,10] लिहाज़ा,नाटो सेनाओं के आते ही पुतिन इतने बौखला सकते हैं कि वे इसका जवाब देने के लिए परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने से बाज़ नहीं आएंगे. जाहिर है कि तब अहंकार की इस लड़ाई की तस्वीर दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की तबाही झेलने पर मजबूर कर देगी. रूस और चीन की दोस्ती जगजाहिर है और सब जानते हैं कि युद्ध का दायरा बढ़ते ही चीन हर हाल में रूस का ही साथ देगा. नाटो के दो प्रमुख ताकतवर देश हैं- फ्रांस और जर्मनी. चूंकि रूसी राष्ट्रपति पुतिन किसी की बजाय नहीं सुन रहे इसलिये इन दोनों देशों ने अन्तराष्ट्रीय कूटनीति के एक अहम औजार का इस्तेमाल करते हुए उसे आजमाने की कोशिश की है. आज यानी मंगलवार को फ्रांस और जर्मनी मिलकर चीन से बातचीत करने वाले हैं कि पुतिन को समझाइये और इस जंग को रोकिये. कोई नहीं जानता कि आगे क्या होगा लेकिन अगर चीन की नीयत साफ हुई तो हो सकता है कि वो पुतिन को तीसरा विश्व युद्ध छेड़ने से रोक दे [11,12]

परिणाम

रूस यूक्रेन युद्ध (Russia Ukraine War) के चलते अंतरराष्ट्रीय राजनीति गर्माई हुई है. दुनिया के देशों को अपने अपने पक्ष में करने के लिए रूस और अमेरिका (USA) जोर लगा रहे हैं. इसमें अब भारत की भूमिका सबसे अहम बन गई है. फिलहाल भारत का औपचारिक रवैया तटस्थ ही है, फिर भी अमेरिका भारत को पूरी तरह अपनी ओर मिलाने की कोशिश रहा है और रूस भारत का साथ चाहता है. चीन (China) भी अमेरिका के साथ नहीं जाएगा, लेकिन वह अभी खुल कर रूस के साथ नहीं है. अब चीन ने अमेरिका पर आरोप लगाया है कि उसी ने यूक्रेन में युद्ध को भड़काया है. चीन ने सीधे सीधे नाटो की भूमिका पर ही सवाल खड़ा कर अमेरिका को कठघरे में लाने का प्रयास किया है. उसका कहना है कि सोवियत संघ के विघटन के बाद ही नाटो को खत्म कर देना चाहिए था. चीन की अमेरिका से खिलाफत छिपी नहीं हैं. पिछले कुछ सालों में चीन ने आर्थिक महाशक्ति के तौर पर अमेरिका को खुली चुनौती दी है. अमेरिका पर भी चीन के बढ़ते प्रभाव का असर देखा जा रहा है.[14,15]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

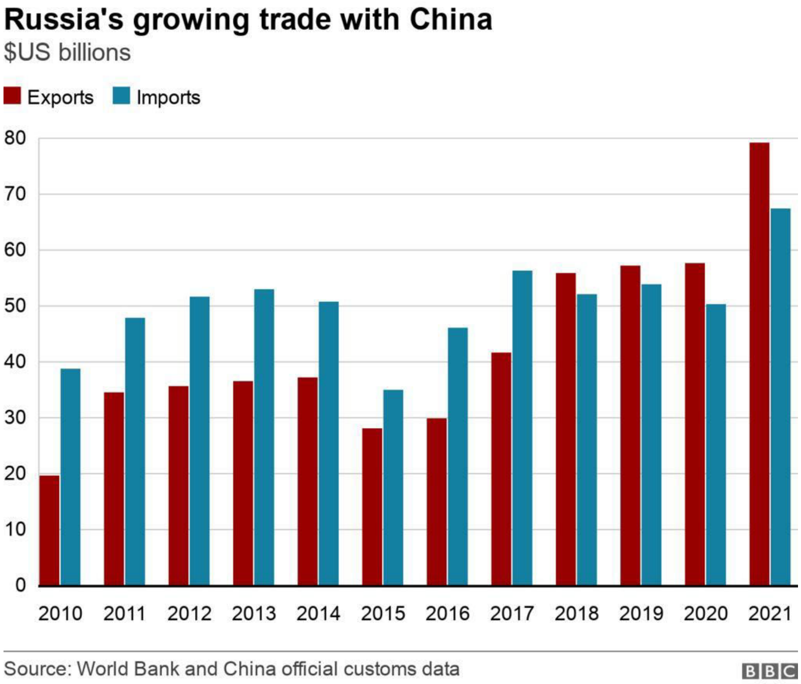

लिजियान ने कहा, “ युक्रेन संकट में एक गुनहगार और प्रमुख भड़काने वाला होने के नाते अमेरिका ने 1999 के बाद के दो दशकों तक अपनी अगुआई में नाटा का पांच चरणों में पूर्व की ओर विस्तार किया” नाटो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरू हुए शीत युद्ध में बनाया गया सैन्य संगठन है जिसका मकसद सोवियत संघ के प्रभाव को यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों में बढ़ने से रोकना था. झाओ ने कहा कि नाटो के सदस्यों की संख्या 16 से 30 करते हुए वे एक हजार किलोमीटर पूर्व की ओर रूस के नजदीक आ गए और रूस को पीछे धकेलने का प्रयास किया. सोवियत संघ के विघटन के बाद से ही नाटो को खत्म करने के मांग उठ रही थी जबकि उस समय विघटन का शिकार रूस कुछ कहने की स्थिति नहीं था. चीन का कहन है कि वह इस विवाद में किसी का भी पक्ष नहीं ले रहा है. उनसे रूस के साथ नो लिमिट्स यानी बिना किसी हद की साझेदारी का ऐलान किया है. उसने रूसी हमले की निंदा करने से इनकार किया है, रूस के खिलाफ लगे प्रतिबंधों का विरोध किया है. इसके साथ इस विवाद के दौरान रूस जानकारी पर नियमित रूप से रूस की ओर से दी जाने वाली सूचनाओं का समर्थन किया है. चीन का यह आरोप ऐसे समय में आया है जब भारत की यात्रा के दौरान अमेरिका के उप राष्ट्रीय सलाहकार दिलीप सिंह ने भारत को चेताया था कि भारत के साथ चीन के सीमा विवाद पर रूस भारत का साथ नहीं देगा. चीन ने सीधे तौर पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन भारत ने अमेरिका के कड़े रुख का विरोध करते अमेरिकी बयान के उस हिस्से पर जवाब दिया कि रूस पर पाबंदियों के खिलाफ जाने के नतीजे होंगे.[16,17]

निष्कर्ष

झाओ का बयान तब आया है जब चीनी और यूरोपीय संघ के नेता एक वर्चुअल सम्मेलन में भाग ले रहे थे जिसमें यूक्रेन चर्चा का प्रमुख विषय होना था. इस दौरान यूरोपीय संघ ने कहा कि वे चीन की ओर से किसी प्रतिबद्धता की उम्मीद कर रहे हैं जिससे पाबंदियों का विरोध ना हो जिससे लड़ाई रोकने के प्रयासों को झटना ना लगे. इस समय रूस यूक्रेन युद्ध के दो पक्ष की बात करें तो यूक्रेन के साथ पश्चिमी देश और अमेरिका है. तो वहीं रूस के साथ बहुत कम देश हैं. चीन रूस के समर्थन में हैं क्योंकि अमेरिका चीन को अपने साथ नहीं देखना चाहेगा. ना ही चीन किसी भी कीमत पर ऐसा करना चाहेगा. रूस और चीन की दोस्ती चरम पर है. लेकिन चीन यह दर्शाना नहीं चाहता है कि वह युद्ध का समर्थक है. वहीं भारत का तटस्थ रवैया और रूस के साथ द्विपक्षीय संबंध अमेरिका को खटक रहे हैं. वह रूस को किसी भी तरह का सहारा सहन नहीं कर सकता है. इस तरह यह युद्ध अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के अखाड़े में जोरों से चल रहा है.[18,19]

रूसी विदेश मंत्री ने चेतावनी दी है कि पश्चिमी देश यूक्रेन को जो हथियार भेज रहे हैं, वह रूस के सैन्य ठिकानों को निशाना बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह तीसरे विश्व युद्ध का असल खतरा बन सकते हैं।

यूक्रेन पर रूसी अटैक के बीच एक बार फिर से रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने तीसरे विश्वयुद्ध की चेतावनी दी है। लावरोव ने सोमवार को कहा कि यूक्रेन के साथ शांति वार्ता जारी रहेगी, लेकिन उन्होंने चेतावनी दी कि तीसरे विश्व युद्ध का खतरा "वास्तविक"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

है। रूसी विदेश मंत्री ने चेतावनी दी है कि पश्चिमी देश यूक्रेन को जो हथियार भेज रहे हैं, वह रूस के सैन्य ठिकानों को निशाना बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह तीसरे विश्व युद्ध का असल खतरा बन सकते हैं। रूसी समाचार एजेंसियों से बात करते हुए, उन्होंने शांति वार्ता को लेकर यूक्रेन के रुख की आलोचना की। उन्होंने कहा, "गुडविल (अच्छी इच्छा) की अपनी सीमाएं होती हैं। लेकिन अगर यह पारस्परिक नहीं है, तो यह बातचीत की प्रक्रिया में मदद नहीं करता है। खैर, हम (यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर) जेलेंस्की द्वारा सौंपी गई टीम के साथ बातचीत में लगे हैं, और ये संपर्क जारी रहेंगे।"

लावरोव ने पूर्व एक्टर जेलेंस्की पर बातचीत के लिए "नाटक" करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा, "वह एक अच्छे एक्टर हैं।" रूसी मंत्री ने आगे कहा, "अगर आप ध्यान से देखें और ध्यान से पढ़ें कि वह क्या कहते हैं, तो आप एक हजार विरोधाभास पाएंगे।" [20]

मौजूदा तनावों को देखते हुए, लावरोव ने कहा कि तीसरे विश्व युद्ध का खतरा "वास्तविक" है। लावरोव ने इंटरफैक्स समाचार एजेंसी को बताया, "(तीसरे विश्वयुद्ध का) खतरा गंभीर है, यह वास्तविक है, आप इसे कम करके नहीं आंक सकते।"

लावरोव ने यूक्रेन पर आरोप लगाया कि वह शांति वार्ता के साथ खिलवाड़ कर रहा है। उन्होंने कहा, "अमेरिका के अधिकारियों ने यूक्रेन का दौरा किया और कहा कि यूक्रेन रूस की सेना को हरा सकता है, हम (US) यूक्रेन को रूसी सेना के खिलाफ हथियार मुहैया कराएंगे। यूक्रेन का अमेरिका के साथ संबंध शांति वार्ता का उल्लंघन है, जोकि विश्व युद्ध के खतरे को बढ़ा सकता है। यह सच हो सकता है और आप इसे हल्के में नहीं ले सकते हैं।"

यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के बारे में उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि "समझौते पर हस्ताक्षर के साथ सब कुछ निश्चित रूप से समाप्त" हो जाएगा। [21]

संदर्भ

1. वेबस्टर, मरियम-. "विश्व युद्ध" । मरियम-वेबस्टर डॉट कॉम। मूल से 11 दिसंबर 2019 को संग्रहीत किया गया । 11 नवंबर 2019 को लिया गया ।
2. ^ एंगेल्स, फ्रेडरिक. "बोर्खाइम का परिचय" । मूल से 2018-07-16 को संग्रहीत । 2015-03-01 को लिया गया ।
3. ^ रैसमस ब्योर्न एंडरसन (अनुवादक: विक्टर रिडबर्ग), ट्यूटनिक माइथोलॉजी , वॉल्यूम। 1, पी. 139 वेबैक मशीन , लंदन में संग्रहीत 2020-01-26: एस सोनेन्सचेन एंड कंपनी, 1889 ओसीएलसी 626839 ।
4. ^ शापिरो और एपस्टीन 2006 , पृ. 329.
5. ^ प्रोफिट, माइकल (2014-06-13)। "मुख्य संपादक के नोट्स जून 2014" । ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी का ब्लॉग । मूल से 2022-04-15 को संग्रहीत । 2022-04-25 को लिया गया ।
6. ^ "प्रथम विश्व युद्ध" . काफी दिलचस्प । मूल से 2014-01-03 को संग्रहीत। क्यूआई सीरीज़ I एपिसोड 2, 16 सितंबर 2011, बीबीसी टू पर भी प्रसारित किया गया ।
7. ^ "ग्रे फ्राइडे: टाइम रिपोर्ट्स ऑन वर्ल्ड वॉर II बिगिनिंग" । समय । 11 सितंबर 1939। मूल से 11 अक्टूबर 2014 को संग्रहीत । 20 अक्टूबर 2014 को लिया गया । द्वितीय विश्व युद्ध पिछले हफ्ते सुबह 5:20 बजे (पोलिश समय) शुक्रवार, 1 सितंबर को शुरू हुआ, जब एक जर्मन बमबारी विमान ने हेल प्रायद्वीप की बगल में पक, मछली पकड़ने के गांव और एयरबेस पर एक प्रक्षेप्य गिराया।
8. ^ "डेन एंडेन वर्डेनस्क्रिग उद्ब्रॉड आई गार मिडैग्स क्ल. 11", क्रिस्टेलिग्ट डगब्लैड , 4 सितंबर, 1939, अतिरिक्त संस्करण।
9. ^ "प्रलय और नाज़ी उत्पीड़न के पीड़ितों की संख्या का दस्तावेज़ीकरण" . विश्वकोश .ushmm.org । मूल से 2020-02-20 को संग्रहीत । 2020-09-05 को लिया गया ।
10. ^ "विश्व युद्ध" । मूल से 11 नवंबर 2019 को संग्रहीत । 11 नवंबर 2019 को लिया गया ।
11. ^ कैलाप्रिस, एलिस (2005). नया उद्धृत करने योग्य आइंस्टीन । प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस. पी। 173. आईएसबीएन 978-0-691-12075-1.
12. ^ "आइंस्टीन की संस्कृति" । एनबीसी न्यूज। 2005-04-19। मूल से 2013-10-05 को संग्रहीत । 2012-08-24 को लिया गया ।
13. ^ "24 जून 1948, पृष्ठ 4 - Newspapers.com पर बर्कशायर ईगल" । न्यूज़पेपर्स डॉट कॉम । मूल से 2022-04-22 को संग्रहीत । 2022-04-22 को लिया गया ।
14. ^ "क्या अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि चौथा विश्व युद्ध 'लाठी और पत्थरों से' लड़ा जाएगा?" . स्नोप्स डॉट कॉम । मूल से 2022-04-22 को संग्रहीत । 2022-04-22 को लिया गया ।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106140|

15. ^ "World War IV". 2002. Archived from the original on 2008-05-06. Retrieved 2010-02-04.Woolsey claims victory in WWIII, start of WWIV
16. ^ Andelman, Professor David; Marenches, Comte Alexandre de; Marenches, Count De; Andelman, David (1992). The Fourth World War: Diplomacy and Espionage ... ISBN 0688092187.Book regarding alleged WWIV
17. ^ "World War IV: Let's call this conflict what it is". 2001. Archived from the original on 2010-03-27. Retrieved 2010-02-04.Why war on terrorism should be called WWIV
18. ^ सबकॉमांडेंट मार्कोस (2001)। "चौथा विश्व युद्ध शुरू हो गया है" । नेपंतला: दक्षिण से दृश्य । **2** (3): 559-572। मूल से 29 अक्टूबर 2014 को संग्रहीत किया गया । 20 अक्टूबर 2014 को लिया गया ।
19. ^ "विश्व युद्ध के शून्य ने 'समुद्री लोगों' की रहस्यमय सभ्यता को नीचे लाया " । न्यू साइंटिस्ट । 2018-04-21 को मूल से संग्रहीत । 2018-04-21 को लिया गया ।
20. ^ "प्रथम विश्व युद्ध वास्तव में क्यों नहीं था" . अर्थशास्त्री । 2014-07-01। मूल से 2018-05-30 को संग्रहीत । 2018-05-29 को लिया गया ।
21. ^ रिचर्ड एफ हैमिल्टन; होल्गर एच. हेरविग, सं. (24 फरवरी 2003)। प्रथम विश्व युद्ध की उत्पत्ति । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पीपी 4-9। आईएसबीएन 978-1-107-39386-8. मूल से 21 जनवरी 2022 को संग्रहीत । 21 जनवरी 2022 को लिया गया ।

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi cross ref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details